प्रश्न- **भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) को सामाजिक न्याय के एक कदम के रूप में भी देखा जा सकता है, लेकिन यह WTO स्तर पर विवादास्पद है। इस कथन का परीक्षण करें।** (200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका :

न्यूनतम समर्थन मूल्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए तथा बताइये कि भारत एक लोककल्याणकारी राज्य है, जो भारतीय संविधान के भाग-IV में प्रदत्त नीति-निदेशक तत्वों में निहित है।

प्रथम पैरा में - भूमिका से लिंक बनाते हुए बतायें कि न्यूनतम समर्थन मूल्य सामाजिक न्याय के उपकरण के तौर पर कार्य करता है-

- फसल पूर्व निर्धारण व एक निश्चित न्यूनतम मूल्य मिलने की गारंटी देता है। किसान चाहे बड़ा काश्तकार हो या लघु-सीमातं।
- तयशुदा रकम पर सरकार किसान के फसल को हमेशा खरीदने को तैयार रहती है। जिससे किसान एक निश्चित रकम के लिए आश्वस्त रहता है।
- बाजार कीमत के उत्तर-चढ़ाव से निर्भिक किसान अपनी फसल को औने-पौने रकम पर बेचने को बाध्य नहीं होता तथा उसका बिचौलियों से बचाव होता है।
- सरकार कृषि को लाभकारी आर्थिक क्रिया बनाकर भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जिसकी लगभग आधी आबादी कृषि से जुड़ी है, समाजिक न्याय करने का प्रयास करती है।
- किसान को प्रेरणा, प्रोत्साहन, लाभकारी फसल उगाने की प्रेरणा व उन्हें गरीबी रेखा से नीचे जाने से बचाती है।

द्वितीय पैरा में - कृषि को लाभकारी आर्थिक प्रक्रिया या जीविकोपार्जन का साधन बनाने के सरकार के इस प्रयास को विश्व-व्यापार संगठन विवाद का विषय व व्यापार विकृति उत्पन्न करने वाले कारक के रूप में देखता है-

- चुंकि विश्व व्यापार संगठन में विकसित देशों का वर्चस्व है और कृषि व्यापार का मुद्दा है तथा विकसित देश उनके लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार में खाद्यानों की कीमत व मांग में कमी को नुकसान की दृष्टि से देखते है।
- विश्व व्यापार संगठन, न्यूनतम समर्थन मूल्य को सब्सिडी मानकर चलाते है तथा इसको समाप्त करने पर बल देता है ताकि उनका हित पूरा हो सके।
- विकसित देश वैश्विक बाजार पर नकारात्मक प्रभाव व विकास की गति धीमी होने का तर्क देते है, और विकासशील देशों पर इस सहायिकी को समाप्त करने के लिए दबाव बनाते हैं।
- भारत के लिए कृषि जीविकोपार्जन की क्रिया है और खाद्य सुरक्षा के लिहाज से यह आवश्यक है। ग्रीन बॉक्स व अम्बर बॉक्स विवाद तथा सब्सिडी की प्रतिशतता को कम करने पर भारत अपना विरोध दर्ज कराता है।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दें